97	क्षा द्रेषा तुरंगाणां	
98	गतानां गर्तवृंक्ति॥ १८०५॥	
99	विस्पारी धनुषा	.9
1	व्स्भारमें गा-	
2	र्जालहरूय तु ।	8
3	स्तिनितं गिर्जिः स्विनितं रिसतादि च ॥ १८०६ ॥	
4	कूतितं स्यादिक्गाना	
5	तिरश्चा रुतवाशिते। जनमहिरा नाम	
6	वृकस्य रेषणं रेषाः जिल्ला भागान्य भागान्य । जाईत	
7	बुकानं भषणां प्रनः ॥ १८०० ॥	3
8	पीडितानां तु किणितं ।	45
9	मिणितं रतक्तितम् । जन्म गणहान	
10	प्रकाणः प्रकणस्तत्त्या	
11	मर्दलस्य तु गुन्दलः ॥ १८०६ ॥	
12	चीत्रनं तु कीचकाना निकार में जिल्ला	
13	भेर्या नादस्तु दर्दरः।	e.

97. Das Wiehern der Pferde (2 W.). — 98. Das Gebrüll der Elephanten (2 W.). — 99. Das Summen des Bogens. — 1. Das Brüllen der Kühe (2 W.). — 2. 3. Donner (5 W.). — 4. Das Zwitschern der Vögel. — 5. Das Geschrei der vierfüssigen Thiere und Vögel (2 W.). — 6. Das Geheul des Wolfes (2 W.). — 7. Das Gebell des Hundes (2 W.). — 8. Wehgeschrei. — 9. Der Laut, den man beim Beischlaf von sich giebt. — 10. Der Ton der Saiten (2 W.). — 11. Der Laut eines mardala (Art Trommel). — 12. Das Pfeifen des Bambusrohrs. — 13. Der Laut einer Pauke.